ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 53-57

©2026 Gyanvividha

https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. प्रेम चन्द भार्गव

सहायक प्राध्यापक, एस. आर. एम. आई. एस. टी. कट्टनकोलाथुर, चेन्नई.

Corresponding Author :

डॉ. प्रेम चन्द भार्गव

सहायक प्राध्यापक, एस. आर. एम. आई. एस. टी. कट्टनकोलाथुर, चेन्नई.

'रश्मिरथी' एक सामाजिक अनुशीलन

शोध सारांश : रश्मिरथी काव्य कृति महाभारत कालीन समाज का आख्यान है भले ही यह कृति कर्ण के जीवन चरित्र का महिमामंडन करती है, लेकिन इसके साथ-साथ समाज के अन्य पहलुओं का भी अवलोखन करती है। महाभारत कालीन सामाजिक व्यवस्था को नये सीरे से देखने का दृष्टिकोण प्रदान करती है। समाज में फैले वर्ण व्यस्था तो थी ही इस वर्ण व्यवस्था वाले समाज में नारी का जीवन हाशिए पर है। समाज की सामाजिक संरचना पर कवि का हृदय दुखता है। कर्ण जैसा धुरंधर व्यक्ति का जीवन समाज के सबसे नीचले पायदान पर होने के कारण तिरस्कृत होता है। शिक्षा पर एक क्षत्र अधिकार केवल तथाकथित राज घराने के पास है। यदि अस्त्रशस्त्र तथा शास्त्र की शिक्षा यदि कोई शुद्र वंश का व्यक्ति धारण करता है तो या तो उसका अंगुठा कटवा लिया जाता है या फिर उसकी अर्जित शिक्षा को श्राप द्वार वापस ले लिया जाता है। इसके बावजूद भी यह शोषित वर्ग सबसे ताकतवर बनकर उभरता है। जिसकी हत्या करने के लिए स्वयं श्रीकृष्ण को शड्यंत्र करना पड़ता है।

बीज शब्द : सामाजिक, समानता, शोषण, जातिगत भेद, स्त्री की दशा, मित्रता, दानशीलता आदि।

मूल शोध : काव्य समाजिक गतिविधियों का साक्ष्य है। समाज में हो रहे निरंतर प्रवाहमय परिवर्तन को कवियों की कलम ने काव्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत करने का कार्य किया है। कवि समाज का सबसे जागृत व्यक्ति होता है। समाज में हो रहे अनैतिकता,व्यभिचार,भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों को देखकर उसकी कलम हुंकार भरने लगती है। कवि केवल कवि नहीं है बल्कि उसका स्वभाव शोधकर्ता जैसा होता है। अपनी कलम के माध्यम से समाज, इतिहास, वेद, पुराण में दबे रह गये वर्ण्य-विषय को उजागर करके पाठकवर्ग के सामने लाने का साहसिक कार्य करता है।

प्रस्तुत शोधालेख में कविकुल भूषण रामधारीसिंह दिनकर जी का सबसे प्रतिष्ठित काव्य रश्मिरथी को केन्द्रित करके तात्कालिक समाज के सामाजिक ढांचे को जाचने एवं परखने का प्रयास किया गया है। महाभारत कालीन पात्र जिसका नाम कर्ण और जिसका जीवन निरंतर वर्ण भेद के चलते दहकता रहता है। यही जातिगत शोषण महाभारत में शोला बनकर भड़कता है। इस संदर्भ में रविरंजन लिखते है कि- **"दिनकर की साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं सामाजिक आलोचना इस बात का गवाह है कि 'रश्मिरथी' की कवि की नजर पूरी दूनिया सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश पर थी।"[1]**

सामाजिक विडंबना यह है कि जातिगत भेदभाव योग्यता एवं कुशलता पर सबसे बड़ा ग्रहण है जिसकी कालिख में लिपटा हुआ कर्ण जैसा दानवीर, कर्मठ मित्र, तेज-सा चमकता हुआ पौरुष से भरा हुआ उसकी योग्यता एवं कुशलता को केवल इस लिए स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि वह शुद्र के घर पला बढा था।

महाभारत कालीन समाज में वर्ण व्यवस्था अपने चरम पर है। मनु महाराज के विधान जैसी व्यवस्था से पूरा समाज चल रहा है। ब्राम्हण शिक्षाटन के लिए है वह भी राजकुल के बच्चों के लिए। क्षत्रीय राज्य के लिए, वैष्य व्यापार करेगा और शूद्र तीनों वर्णों की सेवा करेगा। इस संदर्भ में बालकृष्ण भट्ट अपने निबंध महाभारत के समय का भारत में लिखते हैं कि- **"ऋषियों का चलाया हुआ शुद्ध वैदिक धर्म पर लोग चल रहे थे। चारो वेद और धनुर्वेद आदि उपवेद तथा आर्य ग्रंथ का पठन-पाठन तीनों वर्णों के लोग करते थे।"[2]**

तात्कालीक समय में परशुराम एवं द्रोणाचार्य गुरु के रूप में दिखाई देते हैं जिनके अंदर समाज के अनुकूल मानसिक प्रवृत्तियाँ बनी हुई हैं। शूद्र को शिक्षा नहीं दी जा सकती है यदि किसी कारणवश शूद्र शिक्षा ग्रहण कर लिया तो उसका अंगुठा कटवा लिया जाएगा। श्राप देकर उसकी विद्या वापस ले ली जाएगी। कर्ण के साथ भी तो परशुराम ने ऐसा ही किया। रामधारीसिंह दिनकर उल्लेख करते हैं-

"मान लिया था पुत्र, इसी से, प्राण-दान तो देता हूँ,
पर, अपनी विद्या का अन्तिम चरम तेज हर लेता हूँ।
सिखलाया ब्रह्मास्त्र तुझे जो, काम नहीं वह आयेगा,
है यह मेरा शाप, समय पर उसे भूल तू जायेगा।"[3]

कर्ण के तेज को देखकर द्रोणाचार्य हतप्रभ हो जाते हैं जिसको अबतक सबसे बड़ा धनुर्धन समझकर अपने गुरु होने पर गर्व कर रहे थे द्रोपदी स्वयंवर में कर्ण की धनुर्विद्या और चपलता को देखकर शड्यंत्र का कीड़ा कुलबुलाने लगा था। वे अर्जुन से कहते है कि-

"जनमे नहीं जगत् में अर्जुन! कोई प्रतिबल तेरा,
टँगा रहा है एक इसी पर ध्यान आज तक मेरा।
एकलव्य से लिया अँगूठा, काढ़ी न मुख से आह,
रखा चाहता हूँ निष्कंटक बेटा! तेरी राह।"[4]

यदि समाज में गुरु का स्थान कलुसित हो जायेगा तो समाज निष्चित तौर से दुषित हो जाएगा। गुरु का स्थान बहुत पवित्र एवं पूजनीय माना गया है भगवान से भी उपर गुरु को मान देने की परंपरा रही है, लेकिन ऐसी सोच एवं व्यवहार से क्या ऐसे गुरु की पूजा की जा सकती है? जो पक्षपात करता हो, जो जाति देखकर शिक्षा प्रदान करता हो, या यह पता चल जाए कि जो उसका प्रिय शिष्य है उससे भी कोई बड़ा धनुर्धर है और उसके साथ छल करता हो ऐसे गुरु समाज का पतन ही करेंगे। कर्ण ने जो गुनाह किया ही नहीं उसकी सजा वह आजीवन भूगतता रहा। कर्ण का जब भरी सभा में अपमान किया जाने लगा तो वह ललकार उठता है। जाति-पाति वर्ग भेद का खंडन करते हुए कहता है-

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,

दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।[5]

जिस कर्ण का अपमान जाति देखकर किया जाता है उसके अंदर वीरता और विद्वता कूट-कूट कर भरी हुई है। उसके पराक्रम के आगे सारे योद्धा बौने नजर आने लगते हैं। रामधारीसिंह दिनकर उल्लेख करते है-

इस प्रकार कह लगा दिखाने कर्ण कलाएँ रण की,
सभा स्तब्ध रह गयी, गयी रह आँख टँगी जन-जन की।
मन्त्र-मुग्ध-सा मौन चतुर्दिक् जन का पारावार,
गूँज रही थी मात्र कर्ण की धन्वा की टंकार।[6]

रश्मिरथी काव्य कृति कर्ण के जीवन एवं उसके संघर्ष को सराहती है। कर्ण के अंदर एक आग है जिसमें वह दिन-रात जलता है। उसके पौरुष को न सराहकर उसकी जाति पर चोट की जाती है। उसको नीच दिखाकर अपमान किया जाता है फिर भी कर्ण ललकार कर अपने को स्थापित करता है और समाज के दंभी लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहता है-

'मूल जानना बड़ा कठिन है नदियों का, वीरों का,
धनुष छोड़ कर और गोत्र क्या होता रणधीरों का?
पाते हैं सम्मान तपोबल से भूतल पर शूर,
'जाति-जाति' का शोर मचाते केवल कायर क्रूर।[7]

महाभारत कालीन समय एवं समाज शूद्रों के लिए तो पतन का काल था ही उससे ज्यादे महिलाओं के जीवन को छला। महिलाएं समाज का हिस्सा तो थी लेकिन कई जगह पर उनके साथ शोषण होता है पुरुष प्रधान समाज की हनक उस दौर में भी दिखाई देती है। कुलटा होने का भय उस समय भी महिला को ही दिखाया जाता था। कुंती की बात से एकदम स्पष्ट हो जाता है कि समाज में महिलाओं की दशा क्या थी। जब कुंती कर्ण से मिलने जाती है और वह स्वीकार करती है कि वह उसका ही बेटा है और सामाजिक लोकलाज से उसे नदी में बहा दिया था। इससे महिलाओं की दीनता का पता चलता है- **बेटा धरती पर बड़ी दीन है नारी,**
अबला होती सचमुच पोषिता कुमारी।
है कठिन बंद करना समाज के मुख को,
सिर उठा न पा सकती पतिता निज सुख को।।[8]

इस संदर्भ में साँवत राम बैरवा अपने शोधालेख रश्मिरथी समकालीन प्रासंगिकता मे लिखते हैं कि- **"रश्मिरथी में कुंती के माध्यम से नारी जीवन की विडम्बना को अभिव्यक्त किया गया है। जो वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है। विवाह पूर्व प्रेम से उत्पन्न परिस्थितियों का जिम्मेदार समाज द्वारा केवल नारी को ही ठहरा दिया जाता है जबकि पुरुष भी इसमें बराबर का भागीदार होता है।"[9]**

यदि समाज में महिलाओं के प्रति आदर भाव होता तो द्रोपदी जैसी कुमारी स्वयंवर में खड़ी नहीं की जाती बिना मर्जी के पाँच पुरुषों की पत्नी भी नही बनती और ना ही गांधारी जैसी युवती एक दिव्यांग के साथ व्याही जाती इतना ही नहीं ना ही काशी नरेश की तीन पुत्रियों का अंबा, अंबिका और अंबालिका का विवाह मंडप से हरण किया जाता। ना ही द्रोपदी जैसी पाँच पतियों वाली स्त्री का भरे सभा में चीर हरण किया जाता। पुरुष अपनी पौरुषता को बनाये रखने के लिए हर समय स्त्री का ही हनन किया है। यह अधिकार किसने दे दिया था कि तुम अपनी पत्नी को दाव पर लगा दो? क्या पाँचाली कोई वस्तु थी? महाभारत कालीन समाज में महिलाएँ भोगविलास की वस्तु समझी गई और पुरुष अपने अधीन करके महिलाओं का उपयोग करता रहा।

महाभारत कालीन समाज में वीरता की कद्र है। जो पुरुष वीर है शक्ति रखता है उसका समाज में आदर भाव है। भले जातिगत गालियाँ दी जाती हैं लेकिन वीरताई को अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता है। रश्मिरथी कृति कर्ण और सूयोधन की मित्रता की भी सराहना करती है। कर्ण की वीरता से कोई भले प्रसन्न नहीं हुआ लेकिन सूयोधन बहुत प्रसन्न हुआ। कर्ण को लगातार सराहता है, उसकी वीरता की प्रसंसा कर रहा है। रश्मिरथी में दिनकर जी लिखते हैं

फिरा कर्ण तो, त्यों साधु, साधु कह उठे सकल नर नारी।
राजवंश के नेताओं पर पड़ी विपद अति भारी।
द्रोण, भीष्म, अर्जुन सब फीके, सब हो रहे उदास।
एक सुयोधन बढ़ा बोलते हुए वीर! शाबाश! [10]

जिसे सूतपुत्र कह कर समाज से बहिस्कृत किया जाता है उसे यूयोधन आगे बढ़कर गले लगाता है। अपनी बराबरी पर लाने के लिए कर्ण को अंग देश का राजा बना देता है। समाज में जहाँ ऊँच-नीच की खाई बहुत गहरी थी वहीं सूयोधन जैसा मित्र का रुप भी दिखाई देता है। जो बिना भेदभाव किए कर्ण को अपने समान सम्मान देता है। जिसे पूरी दुनिया बिलन मानती है वह समाज को समान धरातल पर लाने के लिए साहसिक कार्य करते हुए नजर आता है। भले उसमें उसका स्वार्थ ही क्यों न छिपा हो लेकिन डूबते को तिनका का सहारा बनता है। कवि दिनकर लिखते हैं-

अंगदेश का मुकुट कर्ण के मस्तक पर धरता हूँ।
एक राज्य इस महावीर के हित अर्पित करता हूँ।'
रखा कर्ण के सिर पर उसने अपना मुकुट उतार,
गूँजा रंगभूमि में दुर्योधन का जय-जयकार ।[11]

कर्ण इस सम्मान के बदले अपना पूरा जीवन सूयोधन को दान कर देता है। एक उपकार के बदले हित-अहित की चिंता किए वगैर हर कदम पर सूयोधन का साथ कर्ण निभाता चलता है। छल-कपट में महारत हासिल किए हुए कृष्ण जिनको कूटनीतिज्ञता पर बहुत अभिमान था वे भी कर्ण की वफादारी से हार गये। कर्ण का ह्रदय परिवर्तन नहीं कर पाये। रश्मिरथी में कृष्ण कहते है कि- **हरि के मन मे विस्मय छाया,**
बोले कि "वीर शत बार धन्य,
तुझसा न मित्र कोई अनन्य,
तू कुरुपति का ही नही प्राण,
नरता का है भूषण महान।"[12]

कर्ण और सूयोधन की दोस्ती की चर्चा पूरे महाभारत कालीन समय में एक मिशाल बनकर दिखाई देती है। जिसमें न कोई संदेह है और ना ही छलकपट की कोई आशा। जहाँ राज्य के लिए भाई-भाई का गला काटने के लिए अमादा थे वहीं कर्ण जैसा वफादार, दानी और शक्ति से भरा हुआ था।

महाभारत कालीन समय और समाज वीरता और साहस से भरा पड़ा है। राज्य प्राप्त करने के लिए नैतिक अनैतिक, हित-अनहित की चिंता किए बिना अपने कर्मों में दोनों दल लगे हुए हैं। इस संदर्भ में दिनकर जी लिखते हैं-

"द्वापर की कथा बड़ी दारूण
लेकिन, कलि ने क्या दान दिया?
नर के वध की प्रकृया बढ़ी
कुछ और उसे आसान किया।"[13]

रश्मिरथी का समाज स्वार्थी और दंभी हो चला है। अपने दंभ के चलते देश विदेश के सकल वीर समर भूमि में स्वाहा हुए। न पितामह रोक पाए न विदुर और न ही द्रोण जिनके कंधे पर समाज का बहुत बड़ा भार रखा हुआ था।

अपने ही आँखों के आगे अपनों का रक्त बहता रहा। इस संदर्भ में साँवतराम बरैया जी लिखते हैं- **"रश्मिरथी में परशुराम, कृष्ण, भीष्म के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है अपनी सत्ता को बनाये रखने एवं उसकी सीमा का विस्तार करने के लिए कुटिल, राजनीतिज्ञ युद्ध की परिस्थितियों का स्वयं निर्माण करते है और सामान्य जनता के हितों की अनदेखी करते हैं।"**[14]

रश्मिरथी का समाज अस्थिरता से भरा हुआ है। वीरताई इतनी कूट-कूटकर भरी हुई है कि सब वीरों के अंदर दंभ आ गया है। यही दंभ पतन का कारण भी बनता है। एक ऐसा युद्ध होता है कि पूरे भारतवर्ष की धरती वीरों से खाली हो जाती है जिससे आगे चलकर देश को बहुत सारे आक्रमण झेलने पड़ते हैं और अंततः दासता भी सहनी पड़ती है।

रश्मिरथी के द्वारा दिनकर जी बात स्पष्ट कर देते हैं कि समाज में वर्ण व्यवस्था कायम थी और समाज मे जो सबसे नीचले पायदान पर था उसको शस्त्र विद्या से वंचित करने का भरपूर प्रयास किया गया इसके बाबजूद भी कर्ण जैसा महारथी पैदा होता है और अपने पौरुष के बल पर अपना नाम अमर करके गया। एकलव्य जैसा धनुर्धर जिसने एक लकीर छोड़कर गया कि मेहनत और लगन के बल पर कुछ भी हासिल किया जा सकता है। समाज तुम्हारे रास्ते में कितना भी बड़ी बाधा उत्पन्न करे लेकिन तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो। समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी उनको पुरुषों के आदेशानुसार ही जीवन यापन करना था। चाहे कुंती हो, द्रोपदी हो, या फिर गांधारी हो। यह तो राजघराने की बात थी आम जनमानस की हालत क्या रही होगी? यह विचारनीय है। छलकपट और कूटनीतिज्ञता की कुटिल चालों से पूरा समाज फटा जा रहा था।

संदर्भ ग्रंथसूची :

1. https://gadyakosh.org/ रश्मिरथी की लोकप्रियता का समाज शास्ता/ रविरंजन
2. https://gadyakosh.org/ महाभारत के समय का भारत
3. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi रश्मिरथी काव्य
4. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi रश्मिरथी काव्य
5. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi रश्मिरथी काव्य
6. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi रश्मिरथी काव्य
7. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi रश्मिरथी काव्य
8. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi रश्मिरथी काव्य
9. https://svfct.com/%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%81%e0%a4%b5%e0%a4%a4-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%ae-%e0%a4%ac%e0%a5%88%e0%a4%b0%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%b0%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a4%bf%e0%a4%b0%e0%a4%a5%e0%a5%80-2/ साँवतराम वरैया रश्मिरथीः समकालीन प्रासंगिकता
10. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi. रश्मिरथी काव्य
11. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi. रश्मिरथी काव्य
12. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi. रश्मिरथी काव्य
13. https://ebooks.pustak.org/index.php/books/bookdetails/9840/Rashmirathi. रश्मिरथी काव्य
14. https://svfct.com/%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%81%e0%a4%b5%e0%a4%a4-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%ae-%e0%a4%ac%e0%a5%88%e0%a4%b0%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%b0%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a4%bf%e0%a4%b0%e0%a4%a5%e0%a5%80-2/ साँवतराम वरैया रश्मिरथीः समकालीन प्रासंगिकता